ऊँ जै यक्ष कुबेर हरे,
स्वामी जै यक्ष जै यक्ष कुबेर हरे।
शरण पड़े भगतों के,
भण्डार कुबेर भरे। 1 |
॥ ऊँ जै यक्ष कुबेर हरे ॥

शिव भक्तों में भक्त कुबेर बड़े,
स्वामी भक्त कुबेर बड़े।
दैत्य दानव मानव से,
कई-कई युद्ध लड़े ॥ 2 |
॥ ऊँ जै यक्ष कुबेर हरे ॥

स्वर्ण सिंहासन बैठे,
सिर पर छत्र फिरे,
स्वामी सिर पर छत्र फिरे।
योगिनी मंगल गावैं ,
सब जय जय कार करैं ॥ 3 |
॥ ऊँ जै यक्ष कुबेर हरे ॥

गदा त्रिशूल हाथ में ,
शस्त्र बहुत धरे,
स्वामी शस्त्र बहुत धरे।
दुख भय संकट मोचन,
धनुष टंकार करें ॥ 4 |
॥ ऊँ जै यक्ष कुबेर हरे ॥

Kuber Ji Ki Aarti

भांति भांति के व्यंजन बहुत बने,
स्वामी व्यंजन बहुत बने।
मोहन भोग लगावैं ,
साथ में उड़द चने॥ 5 |
॥ ऊँ जै यक्ष कुबेर हरे ॥

बल बुद्धि विद्या दाता,
हम तेरी शरण पड़े,
स्वामी हम तेरी शरण पड़े,
अपने भक्त जनों के,
सारे काम संवारे॥ 6 |
॥ ऊँ जै यक्ष कुबेर हरे ॥

मुकुट मणी की शोभा,
मोतियन हार गले,
स्वामी मोतियन हार गले।
अगर कपूर की बाती,
घी की जोत जले॥ 7 |
॥ ऊँ जै यक्ष कुबेर हरे ॥

यक्ष कुबेर जी की आरती,
जो कोई नर गावे,

स्वामी जो कोई नर गावे ।
कहत प्रेमपाल स्वामी,
मनवांछित फल पावे। 8 |
॥ इति श्री कुबेर आरती ॥